प्राचीन जैन तीर्थ नंदपुर शिलालेखों के दर्पण में

- हरिविष्णु अवस्थी, टीकमगढ़

बुन्देलखण्ड के अतिप्राचीन ओरछा राज्य के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में उपलज़्ध अभिलेखों की महज़्वपूर्ण जानकारी मेरे पास वर्षों से सुरक्षित थी। इनमें से कुछ शिलालेखों का प्रकाशन समय-समय पर स्थानीय दैनिक समाचार पत्र ओरछा टाइज़्स के माध्यम से होता रहा।

कुछ वर्ष पूर्व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. बी. एल. भादानी ओरछा नगर की वास्तु संबंधी प्राचीन ऐतिहासिक जानकारी की तलाश में मेरी कुटिया पर पधारे। उसी समय ओरछा नगर के शिलालेखों के साथ ही साथ प्राचीन ओरछा राज्य (वर्तमान टीकमगढ़ जिला, मध्यप्रदेश) के शिलालेखों का संकलन भी उन्हें दिखाया। डॉ. भादानी जी ने उनका प्रकाशन करने हेतु मुझे प्रोत्साहित किया तथा उनके प्रकाशन में यथा-योग्य सहयोग प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।

हमारे संकलन में जैन तीर्थ अहार के मात्र दो शिलालेख ही थे। जबकि मैंने स्वयं वहाँ अनेक मूर्तियों की पाद पीठिका पर अंकित शिलालेख देखे थे। अहार क्षेत्र के शिलालेखों संबंधी एक पुस्तक मुझे अहार क्षेत्र के मंत्री पं. जय कुमार शास्त्री पठा वालों की कृपा से प्राप्त हुई।

इस पुस्तक में अहार क्षेत्र में उपलज़्ध सभी छोटे-बड़े शिलालेखों का विवरण दिया गया है। भगवान् शांतिनाथ की भव्य एवं विशाल प्रतिमा की पाद-पीठिका पर मार्गशीर्ष सुदि 3 शुक्रवार संवत् 1237 का एक लेख अंकित है। इस शिलालेख में देवपाल के पुत्र रत्नपाल द्वारा मूर्ति की प्रतिष्ठा के उल्लेख के साथ ही वाणपुरे एवं नंदपुरे नामक स्थानों में भी पूर्व में मूर्ति प्रतिष्ठा का उल्लेख है। इनमें वाणपुरे नगर तो वर्तमान समय में टीकमगढ़ नगर से मात्र 10 कि.मी. दूर स्थित है, किन्तु नंदपुरे स्थान की पड़ताल अब तक नहीं हो सकी थी। यहाँ के एक शिला में महिषणपुरे का भी उल्लेख है। इसकी भी पड़ताल अब तक नहीं हो सकी। भगवान् शांतिनाथ के पाद पीठ पर 9 पंक्तियों में अंकित शिलालेख की चौथी पंक्ति -

दिष्ट्या नंदपुरे परः परनरानंद प्रद श्रीमता येन श्रीमदनेस सा (कमल पुष्प) गरपुरे तज्जन्मनो निर्ज़्मिमे सोयं श्रेष्ठ वरिष्ठ गल्हण इति श्री रल्हणज़्यादभूत्

कई महीनों के परिश्रम के फलस्वरूप सन् 2014 में मेरी शिलालेख संबंधी पुस्तक बुन्देलखण्ड के शिलालेख प्रथम भाग ''औरछा राज्य'' प्रकाशित हुई। अनेक विज्ञजनों ने बुंदेलखण्ड की पूर्व देशी रियासतों से संबंधित ऐसी ही पुस्तक की रचना का परामर्श एवं आशीर्वाद दिया। प्रोत्साहित होकर मैंने वर्तमान जिला छतरपुर (मध्यप्रदेश) के शिलालेखों पर कार्य करने का निर्णय लिया। ज्ञातव्य है कि वर्तमान जिला छतरपुर में बुंदेलखण्ड के पूर्व देशी राज्य विजावर, लुगासी, आलीपुरा, छतरपुर, आदि अनेक राज्य शामिल हैं।

शिलालेख संबंधी जानकारी जुटाने का अभियान मैंने छतरपुर जिले में नौगाँव के निकट स्थित राजकीय धुबेला ज़्यूजियम से आरंभ किया। इसमें प्रदर्शित मूर्तियों में अंकित शिलालेखों को नोट किया। इनमें चार-पाँच शिलालेख जैनधर्म की पाद पीठिका पर अंकित हैं। प्राप्त सूचना के अनुसार इन मूर्तियों को जिस ग्राम मऊ (सहानिया) में धुबेला संग्रहालय स्थापित है, उसी संग्रहालय में लाया गया था।

धुबेला संग्रहालय के शिलालेखों का विवरण लेने के पश्चात् मैने विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खजुराहो का रुख किया। खजुराहो के अधिकांश शिलालेख प्रकाशित हैं। मेरा विचार था कि शिलालेखों के फोटोग्राफ भी यदि उनके विवरण के साथ संलग्न रहेंगे तो पाठकों को उनसे अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ही खजुराहो जाना हुआ।

खजुराहो के वैष्णव एवं शैव्य मंदिरों के समूह के शिलालेख के फोटोग्राफ लेकर पुरातज़्व संग्रहालयों का अवलोकन करने पश्चात् जैन मंदिर समूह की ओर रुख किया, जैन मंदिर समूह की अनेक मूर्तियों की पाद पीठिका पर लेख अंकित हैं। दुर्भाग्यवश कैमरा की बैटरी डिस्चार्ज हो जाने कारण उनके चित्र तो न ले सका, किंतु उन सभी शिलालेखों के विवरण नोट कर लिए। इसी परिसर में साहू शांतिप्रसाद जैन कला संग्रहालय स्थापित है, जो अपनी भव्यता में अद्वितीय है।

अपने गृहनगर वापिस लौटने पर शिलालेखों को व्यवस्थित कर छतरपुर जिले के अन्य स्थानों पर उपलज़्ध शिलालेखों के सज़्बन्ध में अपने परम मित्र, बुन्देलखण्ड

इतिहास के अधिकारी विद्वान् डॉ. काशी प्रसाद जी त्रिपाठी से चर्चा करने हेतु उनके यहाँ गया। त्रिपाठी जी की बैठक में टेबिल पर संस्कार सागर मासिक पत्रिका का माह जून 2015 ई. का अंक रखा था। जब तक वे बैठक में आते मैं पत्रिका के पृष्ठ पलटने लगा।

पत्रिका में डॉ. त्रिपाठी का एक लेख श्री दिगज़्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ नंदपुर देखकर उसे आद्योपांत पढ़ गया। वहाँ के शिलालेखों से उसकी प्राचीनता की अनुभूति हुई। इसके पश्चात् इस स्थान की प्राचीनता आदि के संबंध में त्रिपाठी जी से गंभीर चर्चा हुई।

अहार क्षेत्र के एक शिलालेख में नंदपुर तथा एक शिलालेख में महिषाणपुर नामों के उल्लेख होने का सहज ही मुझे स्मरण हो आया। डॉ. त्रिपाठी के अकाट्य तर्क ने मुझे प्रभावित किया। उन्हें सुनकर नवागढ़ नंदपुर नामक स्थान को स्वयं अपनी दृष्टि से देखने की इच्छा बलवती हो गई। डॉ. त्रिपाठी जी से जब मैंने अपनी उस स्थान को देखने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने मुझे ब्र.जयकुमार जी जैन 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य से सज़्पर्क करने हेतु उनका दूरभाष नज़्बर नोट कराया। निशान्त जी से सज़्पर्क किया। श्री निशान्त जी ने उस स्थान की भौगोलिक स्थिति से अवगत कराया। मैंने टीकमगढ़ से दो पहिया वाहन से नवागढ़ जाने का निश्चय किया। श्री निशांत जी ने वहाँ के व्यवस्थापक को सहयोग करने हेतु पत्र लिख दिया।

अपने एक युवा मित्र के साथ मोटर साइकिल से नवागढ़ पहुँचा उस छोटे से ग्राम में प्राचीन विशाल जैन तीर्थ के दर्शन कर में स्तज़्ध रह गया। व्यवस्थापक के सहयोग से एक-एक खण्डित मूर्ति एवं स्तंभों को देखा। शिलालेखों का विवरण निज़्न अनुसार है।

यहाँ कुल 21 शिलालेख देखने को मिले जिनमें 8-10 शिलालेख ही पठनीय है यथा-

1- भगवान् महावीर की खण्डित प्रतिमा पर सं. 1195 का लेख अंकित है। इसमें महिचंद पत्नी तिसुदि पुत्र देल्हण पुत्र वधू वील्हा के नामों का उल्लेख है।

स (संवत्) 1195 गोला पूर्वान्वये साहु (शाह) महिचंदभार्या तिसुदि तत्सुत सावु (शाह) देल्हणवधु वील्हा मामी सल्हा ऐते प्रणमंति ।।

2- एक अलंकृत स्तंभ पर संवत् अंकित नहीं है। इस पर साहु (शाह) महिचंद पुत्र साहु देल्हण का नाम उल्लेख है।

साहु (शाह) महिचन्द पुत्र साहु देल्हण केन (तेन) कारीत्।

शाह महिचन्द्र के पुत्र देल्हण द्वारा यह निर्माण कार्य कराया गया।

3- एक मानस्तंभ पर स0 1203 अंकित है। इसमें साहु (शाह) रासल सुत लुल नामों का उल्लेख है।

1 संवतु (संवत्) 1203 अषाढ बदि 10 गोला

2. पूर्व्व अन्वे साहु (साहू) रासल सुत लुल

4- द्वितीय मानस्तंभ पर भी सं.1203 अंकित है। इसमें रामचंद्र सुत बालु का उल्लेख है।

1- संवत् 1203असढ़ (असाढ़) वदि 10 गोलापूर्व अ-

2- न्वे साहु (साह) रामचंद्र सुत बालु।

प्रशस्ति के आलोक में संवत् 1203 में गोलापूर्व अन्वय के साह रामचंद्र के पुत्र बालु ने इसे बनवाया और प्रतिष्ठित कराया था।

5- तृतीय मानस्तंभ पर भी सं.1203 अंकित है। इसमें रासल पुत्र शांति का उल्लेख है।

1. संमतु (संवत) 1203 अषाढ वदि 10 बुदो (बुधौ) गो

2. लापूर्व अन्वे साबु (साह) रासल सुत सांति (शांति) ।

इस प्रशस्ति के आलोक में इस मानस्तज़्भ की प्रतिष्ठा संवत् 1203 में गोलापूर्व शाह रासल के पुत्र शान्ति ने कराई ज्ञात होती है।

6- एक चौथा स्तज़्भ भी है। इस पर सं0 1203 ---- अंकित है। इसके नाम अपठनीय है।

1. स. (संवत्)1203 (अषाढ वदि) दि.10 गो. (गोलापूर्व)

इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है इस मानस्तज़्भ का निर्माता भी गोलापूर्वान्वयी रहा है। इस प्रकार चारों मानस्तज़्भ गोलापूर्व जैन समाज की भक्ति और श्रद्धा के प्रतीक हैं।

7- पूर्णतः खण्डित एक मूर्ति की पादपीठिका पर संवत् अंकित नहीं है। संभव है वह मूर्ति के खण्डित भाग में रहा हो। इसमें साहू (शाह) वील्हा तस्यसुत लषम् का उल्लेख है।

1. सावु (साहु) वील्हा तस्य सुत लषम्।

2. अंबिका प्रलामति (प्रणमति) ।

शाह वील्हा के पुत्र लषम् अंबिका के चरण स्थापित कर उसे वह प्रणाम करता है।

8- भगवान् शांतिनाथ की खण्डित मूर्ति की पाद पीठिका पर स. 1202 अंकित है। इसके नीचे बाई ओर 2 पंक्तियों में पहली पंक्ति में गोला पूर्वान्वय तथा उसके नीचे सलदेसल अंकित है। उसी के सामने दाहिनी ओर दो पंक्तियों में पहली पंक्ति में साहू (शाह) केविनस सुतस्य रासल अंकित है।

दायी ओर	बाई ओर
संवतु 1202 गोला	सावु (साहू) केविनस सु
(पूव्व) अन्वे भ्रातासलदेसल	तस्य रासल

इन शिलालेखों के कुछ नाम ऐसे लगे जैसे इसके पहले मेरे द्वारा देखे गए अहार धुबेला एवं खजुराहो के शिलालेखों में भी इनसे मिलते-जुलते नाम हों ।

मंदिर के निकट स्थित एक छोटी सी पहाड़ी पर एक सर्वांग सुन्दर राजसी वेशभूषा में एक मूर्ति देखने को मिली। इस मूर्ति में उत्कीर्ण राजसी व्यक्ति द्वारा दाढी मूंछ रखी गई है। मूर्ति में ऊपर की ओर एक छोटे आकार की जैन प्रतिमा बनी हुई थी। बहुत देर तक ध्यानपूर्वक देखता रहा। दिमाग को इधर-उधर घुमाया तो याद आया की इसी तरह की दाढी-मूंछ वाली प्रतिमा मुझे अहार और खजुराहो में भी देखने को मिली थी।

इतनी सुन्दर प्रतिमा को मंदिर में स्थान ज़्यों नहीं मिला? इस प्रश्न उठ खड़ा हुआ सोचता रहा । एक हल (सही हो या गलत) यह समझ में आया कि यह मूर्ति की वेशभूषा से तो लगा मानो यही यहाँ प्राचीन जैन तीर्थ स्थल के निर्माता श्रेष्ठी हो ।

इसके पश्चात् चित्रित शैलाश्रय और उसमें बने रंगीन रेखांकनों को देखकर

अवाक् रह गया। किसी चित्रित शैलाश्रय को देखने का यह मेरा प्रथम अवसर था। इतिहास का छात्र होने के नाते शैलाश्रयों की प्राचीनता के संबंध में थोड़ा-बहुत पढ़ा था। इस शैलाश्रय को देख कर इस स्थान की प्राचीनता के संबंध में अन्य किसी साक्ष्य की आवश्यकता शेष ही नहीं रह जाती।

बातों-बातों में पथ प्रदर्शक से भैंसवारी नाम के गाँव का नाम सुनने को मिला। माथा ठनका कहीं अहार के शिलालेख में अंकित महिषणपुर ही तो नाम बदलकर भैसवारी (भैसावारी-भैसावानी) तो नहीं हो गया? सोचा जब वसुहाटिका और मदनेशसागरपुर के स्थान पर अहार नाम हो सकता है तो महिषणपुर का भैसवारी और नंदपुर का नवागढ़ ज़्यों नहीं हो सकता। इसी तरह की विचारों में डूबता उतराता टीकमगढ़ की ओर वापिस लौट पड़ा।

दूसरे दिन नोट बुक उठाकर धुबेला एवं खजुराहो के शिलालेखों को प्रथम पृथक पृष्ठों पर नोट किया। अहार क्षेत्र के शिलालेख पुस्तक खोलकर सामने रखी। नवागढ़ नंदपुर के शिलालेखों में 1-महिचंद उसकी पत्नी 2-तिसुदि उसके पुत्र 3-देहल्ण तथा पुत्र 4-बील्हा) (महिचंद एवं पुत्र देल्हण के नामकी पुनरावृज़ि एक शिला लेख में और हुई है) 5-रासल 6-पुत्र लुल 7- रामचंद 8-सुत बालु 9-सांति रासल 10 वील्हा 11 पुत्र लषम् 12 केविनस 13 सलदेसल 14 पुत्र रासल कुल 14 नामों का उल्लेख है।

खजुराहो के संवत् 1215 के संभवनाथ भगवान् के शिलालेख में महिचंद नाम उल्लेख देखकर नवागढ़ के महिचंद का स्मरण हो आया। इस शिलालेख में महिचंद के अतिरिक्त उसके अन्य भाईयों-महागण, सिरीचंद, जिनचंद एवं उदयचंद के नामों का भी उल्लेख है। इस प्रकार संवत् 1195 में भगवान् महावीर की नवागढ़ (नंदपुर) मूर्ति को प्रतिष्ठा कराने वाले महिचंद पकड़ में आये।

4 ओ।। संवत् 1215 माघसुदि 5 श्रीमन्मदनज़्मदेव प्रवर्द्धामानविजयराज्ये ।। ग्रहपतिवंसे (षे) श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्रपाहिल्लः । पाहिल्लांगरुसाधुसाल्हे (ते) नेद (य) प्रतिमाकारितेति ।। ।। तत्पुत्राः महागण । महीचन्द्र । सि (रि) चन्द । जिनचन्द उदयचन्द प्रभशित सज़्भवनाथ प्रणमति नित्यं ।। मंग (ल) महाश्री ( ) ।। रूपकार रामदेव महाश्री ( ) ।।

महिचंद के पूर्व वर्णित एक भाई जिनचंद द्वारा संवत् 1209 में धुबेला में भगवान् शांतिनाथ की तथा संवत् 1215 में खजुराहो में भी मूर्ति प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख शिलालेखों में देखने को मिला। महिचंद के ही एक भाई उदयचंद ने संवत् 1203 में धुबेला में भगवान् शांतिनाथ की प्रतिष्ठा कराई और एक मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत् 1215 में खजुराहो में तथा संवत् 1237 में अहार में शांतिनाथ की प्रतिष्ठा कराई। ज्ञातव्य है उदयचंद महिचंद के भाइयों में सबसे छोटा था। महिचंद एवं उसके भाई जिनचंद तथा उदयचंद द्वारा नवागढ, धुबेला, खजुराहो एवं अहार आदि विभिन्न स्थानों में मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराया जाना उस परिवार की धन सज़्पन्नता तथा उस परिवार के वैभव का प्रतीक है।

यह लेख शान्तिनाथ की काले पाषाण की खड़गासन प्रतिमा (160×56 सेमी संग्रहालय क्रमांक 24) के पादपीठ पर उत्कीर्ण है।

1 सिद्ध गोलापूर्व्वान्वये साधु स्वयंभूधर्ज़्मवत्सल तत्सुतौ स्वामिनामा च देवस्वामिगुणान्वित ।। 1 देवस्वामि

2 सुतौ श्रेष्ठौ सु (शु) भचंद्रोदयचंद्रक (कौ) । कारित च जगन्नाथं शान्तिनाथं जिनोज़म।। 2 धर्ज़्मासे (शे) पि 14। 3 तथा दुज़्बरान्वये साधुजिनचंद्रतत्पुत्रहरिश्च (न्द्र) तत्सुतलक्ष्मीधर श्री सा (शा)-न्तिनाथ प्रणमति सरा. (दा) ।

4. लक्ष्मीधरस्य धर्ज़्म संधिज श्रीमन्मदनवर्ज़्मदेव-राज्ये संवत् 1203 फा0 सुदि 6 सोमे। नवागढ़ के एक शिलालेख में वील्हा पुत्र लषम् का नामोल्लेख है। ज्ञातव्य है कि लषम के नाम का उल्लेख धुबेला में संवत् 1199 में प्रतिष्ठित भगवान् नेमिनाथ की पाद पीठिका पर भी है।

यह लेख बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ की काले पाषाण की प्रतिमा (संग्रहालय क्रमांक 7) के पाद पीठ पर उत्कीर्ण है। प्रतिमा मस्तक विहीन है तथा चार टुकड़ों में खण्डित है। लेख की भाषा संस्कृत और लिपि नागरी है।

1. गोल्लापूर्व्वकुले जातः साधुर्व्वा (ले) (गुणा.) न्वितः तस्य देवकरो पुत्र पद्मावतीप्रियाप्रियः।। (1) तयोर्जातो सुतौ सि (शि)-

2. स्तौ (टौ) सी (शी) लव्रतविभूशितौ। धर्ज़्मा-चाररतौं नित्यं ज़्यातौ म(ल्ह)णजल्ह(णौ)।। (2) मल्हणस्य व (धूरासीत्स) त्यसी (श) ला पतिव्रता।

श्रेष्ठवीवीतनूजा च प्रबुद्धा वि (वि) नयान्विता ।। (3) लषम (क्ष्म) णाद्यास्तया जाताः पुत्राः गुण (गणान्विताः)

.....ढ्या जिनचरणाराधनोद्यता । (4) कारितश्च जगन्नाथ (नेमि) नाथो भवातकः । त्रै (लोज़्यश) रणं देवो जगन्मगलकारकः ।। (5) सज़्वतु (त्) 1199 वैशाख सुदि 2 रवौ रो (हिण्याम्)

खजुराहो के संवत् 1215 के एक शिलालेख में महिचंद भाईयों के पूर्वजों के नामों का उल्लेख इस प्रकार है- देदू के पुत्र पाहिल, पाहिल के पुत्र साल्हे और साल्हे के पाँच पुत्र महागण, महीचंद, सिरीचंद, जिनचंद एवं उदयचंद के नामों का उल्लेख है। इस विवरण से स्पष्ट होता है महीचंद के पूर्वज, धर्मपरायण, धन वैभव से एवं तत्कालीन शासकों के विश्वास पात्र रहे। उपर्युक्त नवागढ़, धुबेला खजुराहो एवं अहार के शिलालेखों में आये नाम एक दूसरे से पूर्णतः समबद्ध है। स्पष्ट है कि महीचंद ने अपने भाइयों की भाँति ही खजुराहो एवं प्राचीन नंदपुर (वर्तमान नवागढ़) में प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराई थी। धुबेला, खजुराहो, अहार एवं वर्तमान नवागढ़ पूर्व नाम में नंदपुर के लगभग केन्द्र में अहार क्षेत्र है जहाँ से धुबेला, नवागढ (प्राचीन नंदपुर) की दूरी लगभग बराबर है। खजुराहो इन दोनों स्थानों की तुलना में अहार से थोड़ा दूर पड़ता है।

उपर्युक्त वर्णित स्थानों एवं वहाँ उपलज़्ध शिलालेखों में प्राप्त विवरणों का अध्ययन करने पर निष्कर्षतः मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि वर्तमान नवागढ़ है पूर्व का नंदपुर ही आवश्यक नहीं कि पाठक मेरी मान्यता को स्वीकारें ही।